२४. और (तुम्हारे लिए) शादी-शुदा औरतें (हराम की गई हैं) लेकिन जो (दासी) तुम्हारी मिल्कियत में हों,[1] यह हुक्म तुम पर अल्लाह ने फ़र्ज़ कर दिये हैं, और इन के सिवाय दूसरी औरतें तुम्हारे लिए हलाल की गई कि अपने माल (महर) से उन से विवाह करो, बदकारी के लिए नहीं पाकी के लिए, इसलिए जिन से तुम फ़ायेदा उठाओ उन्हें उनका महर दो,[2] और तुम मुक़र्रर महर के बाद आपसी रज़ामंदी से जो चाहो तय कर लो तुम पर कोई बुराई नहीं, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है।

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿24﴾

२५. और तुम में से जो आज़ाद मुसलमान औरत से शादी की ताक़त न रखता हो वह उस मुसलमान दासी से (शादी करे) जो तुम्हारी मिल्कियत में हो। अल्लाह तुम्हारे अमल से पूरी तरह बाख़बर है, तुम आपस में एक ही हो, इसलिए तुम उन के घर वालों की इजाज़त से उन से शादी करो[3] और नियम के मुताबिक़ उनका महर दे दो, वह पाक हों बदकार न हों, न गुप्त (पोशीदा) प्रेमी रखने वालियाँ, तो जब यह शादी शुदा हो जायें फिर बदकारी करें तो उन पर आज़ाद औरतों की आधी सज़ा है[4] यह शादी का हुक्म उस के लिये है जिसे बदकारी का डर हो और सहन करना तुम्हारे लिये अच्छा है और

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿25﴾

The Ummah Technology Mission

---

[1] क़ुरआन करीम में إحصان चार मानों में इस्तेमाल हुआ है (१) शादी (२) आज़ादी (३) पाकीज़गी (४) और इस्लाम, इस बिना पर محصنات के चार मतलब हैं (१) शादी-शुदा औरतें (२) आज़ाद औरतें (३) पाक दामन औरतें (४) और मुसलमान औरतें। यहाँ पहला मायने मुराद है।

[2] यह इस बात पर ज़ोर है कि जिन औरतों से तुम शादी धार्मिक रूप से करके फ़ायेदा और सुख हासिल करो, उन्हें उनका मुक़र्रर महर ज़रूर अदा कर दो।

[3] इस से मालूम हुआ कि दासी का मालिक ही दासी का संरक्षक (वली) है, दासी की शादी किसी से उसकी मर्ज़ी के बिना नहीं किया जा सकता, इसी तरह दास भी मालिक के हुक्म के बिना किसी से शादी नहीं कर सकता।

[4] यानी दासियों को सौ के बजाय (आधे यानी) पचास कोड़े की सज़ा दी जायेगी, यानी उनके लिए पत्थर मारकर मार डालने की सज़ा नहीं हो सकती, क्योंकि वह आधी नहीं हो सकती, और कुंवारी दासी को ताज़ीरी दंड होगा। (तफ़सीली जानकारी के लिए तफ़सीर इब्ने कसीर देखें)

अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है।[1]

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ (26)

२६. अल्लाह (तआला) तुम्हारे लिये वाज़ेह करना और तुम्हें तुम से पहले के (नेक लोगों का) रास्ता दिखाना और तुम्हारी तौबा क़ुबूल करना चाहता है और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है।

وَاللَّهُ يُرِيدُ أَن يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَن تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا (27)

२७. और अल्लाह तआला चाहता है कि तुम्हारी तौबा क़ुबूल करे और जो लोग कामवासना के अधीन (ख़्वाहिशात के पैरो) हैं वह चाहते हैं कि तुम उस से बहुत दूर हट जाओ।

يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُخَفِّفَ عَنكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْإِنسَانُ ضَعِيفًا (28)

२८. अल्लाह तुम्हारा बोझ हलका करना चाहता है, और इंसान कमज़ोर पैदा किया गया है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَن تَكُونَ تِجَارَةً عَن تَرَاضٍ مِّنكُمْ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا (29)

२९. हे मुसलमानो! अपना माल आपस में नाजायज़ तरीक़े से न खाओ, लेकिन यह कि तुम्हारी आपस की रज़ामंदी से तिजारत हो,[2] और अपने आप को क़त्ल न करो,[3] बेशक अल्लाह तआला तुम पर रहम करने वाला है।

The Ummah Technology Mission

---

[1] यानी दासी के साथ शादी वही लोग कर सकते हैं, जो अपनी जवानी के जज़्बात पर क़ाबू रखने की ताक़त न रखते हों, और बुराई में पड़ने का डर हो, अगर ऐसा डर न हो तो उस वक़्त तक सब्र करना अच्छा है जब तक किसी आज़ाद ख़ानदानी औरत से शादी करने लायक़ न हों।

[2] इसके लिए यह शर्त है कि लेन-देन जायज़ कामों का हो, हराम की तिजारत आपसी रज़ामंदी से भी नाजायज़ ही रहेगा, इस के सिवाय रज़ामंदी में ख़ियार-ए-मजलिस का भी मसला आता है, यानी जब तक एक-दूसरे से जुदा न हो, सौदा ख़त्म करने का हक़ रहेगा, जैसा कि हदीस में है:

«الْبَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا»

"दोनों आपस में सौदा करने वाले को, जब तक जुदा न हों हक़ है।" (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम किताबुल बोयुअ)

[3] इसका मतलब ख़ुदकशी भी हो सकती है, जो बड़ा गुनाह है और गुनाह करना भी जो तबाही की वजह है, और किसी मुसलमान का क़त्ल करना भी, क्योंकि सभी मुसलमान एक जिस्म की तरह हैं, इसलिए उसका क़त्ल करना भी ऐसा ही है जैसे अपने आपको ख़ुद क़त्ल कर लिया हो।

३०. और जो इंसान यह (नाफ़रमानी) हद लांघ कर और ज़ुल्म से करेगा तो क़रीब मुस्तक़बिल में हम उसे आग में डालेगें, और यह अल्लाह के लिए बड़ा आसान है।

وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيهِ نَارًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا (30)

३१. अगर तुम इन बड़े गुनाहों से बचते रहोगे जिन से तुम को मना किया जाता है तो हम तुम्हारे छोटे गुनाहों को दूर कर देंगे और इज़्ज़त के दरवाज़े में दाख़िल कर देंगे।

إِن تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُم مُّدْخَلًا كَرِيمًا (31)

३२. और उस चीज की तमन्ना न करो, जिस की वजह से अल्लाह ने तुम में से किसी को किसी पर फ़ज़ीलत अता की है, मर्दों का वह हिस्सा है जो उन्होंने कमाया और औरतों के लिए वह हिस्सा है जो उन्होंने कमाया, और अल्लाह (तआला) से उसका फ़ज़्ल मांगो, बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज का जानकार है।

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا ۖ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۚ وَاسْأَلُوا اللَّهَ مِن فَضْلِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا (32)

३३. और मां-बाप या क़रीबी रिश्तेदार जो छोड़कर मरें, उसके वारिस हम ने हर इंसान के मुक़र्रर कर रखे हैं,[1] और जिन से तुम ने अपने हाथों मुआहदा किया है उन्हें उनका हिस्सा दो, हक़ीक़त में अल्लाह तआला हर चीज को देख रहा है।

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَآتُوهُمْ نَصِيبَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا (33)

३४. मर्द औरत पर हाकिम हैं, इस वजह से कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी है, और इस वजह से कि मर्दों ने अपना माल ख़र्च किया हैं,[2] इसलिए नेक फ़रमाबर्दार औरतें शौहर की ग़ैर मौजूदगी में अल्लाह की हिफ़ाज़त के ज़रिये

الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَبِمَا أَنفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ ۚ فَالصَّالِحَاتُ قَانِتَاتٌ حَافِظَاتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ

The Ummah Technology Mission

---

[1] موالی बहुवचन (जमा) है مولی का, और مولی के कई मतलब हैं, दोस्त, आज़ाद किया गया ग़ुलाम, चचेरा भाई, पड़ोसी। लेकिन यहाँ पर इससे मुराद वारिस हैं, मतलब यह है कि हर मर्द-औरत जो कुछ छोड़ कर मर जायेंगे उस के वारिस मां-बाप और दूसरे क़रीबी रिश्तेदार होंगे।

[2] इस में मर्द की हाकमियत और फ़ज़ीलत की दो वजह बताई गई है, एक फ़ितरी है जो उस की जिस्मानी ताक़त और दिमाग़ी सलाहियत है, जिस में मर्द औरत से यक़ीनी तौर से बेहतर है। दूसरा सबब यह है, जिसको हासिल करने का हक़ दीन इस्लाम ने मर्द को दिया है, और औरत को उसकी फ़ितरी कमज़ोरी और ख़ास इल्म के सबब जो इस्लाम ने औरत को इस्मत और उसकी पाकीज़गी की हिफ़ाज़त के लिए ज़रूरी बतायी है, औरत को आर्थिक उलझनों से दूर रखा है।

اللّٰهُ ۗ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا (34)

(इज्ज़त और माल) की मुहाफ़िज़ औरतें हैं और जिन औरतों से तुम्हें नाफ़रमानी का डर हो उन्हें तंबीह करो, और उनका बिस्तर अलग कर दो (फिर भी न मानें) तो मारो और अगर तुम्हारा कहना मान लें तो उन पर रास्ते की खोज न करो,[1] बेशक अल्लाह बहुत बड़ा है।

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا (35)

३५. अगर तुमको (शौहर-बीवी के) बीच अनबन होने का डर हो तो एक पंच पति के परिवार से और एक बीवी के परिवार से मुक़र्रर करो, अगर ये दोनों सुलह कराना चाहें तो अल्लाह उन दोनों को मिला देगा, बेशक अल्लाह जानने वाला ख़बर रखने वाला है।

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۙ (36)

३६. और अल्लाह की इबादत करो, उस के साथ किसी को शरीक न करो, और माँ-बाप, रिश्तेदारों, यतीमों, गरीबों, करीब के पड़ोसी, दूर के पड़ोसी[2] और साथ के मुसाफ़िर के साथ एहसान करो, और मुसाफ़िर और जो तुम्हारे ताबे हैं (उन के साथ), बेशक अल्लाह डींग मारने वाले, घमंडी से मुहब्बत नहीं करता।

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۚ (37)

३७. जो लोग (ख़ुद) कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी करने को कहते हैं, और अल्लाह तआला ने जो अपने फ़ज़्ल से उन्हें अता कर रखा है उसे छिपाते हैं, हम ने उन नाशुक्रों के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।

The Ummah Technology Mission

---

[1] नाफ़रमानी की हालत में सब से पहले औरत को समझाना-बुझाना है, फिर वक़्ती तौर से अलग हो जाना है, जो एक अक़्लमंद औरत के लिए बहुत बड़ी चेतावनी है। जब इस से भी न माने तो थोड़ी मार मारने का हुक्म है, लेकिन यह मार पशुओं वाली या ज़ालिमाना न हो जैसाकि जाहिल लोगों की आदत है।

[2] الجار الجنب रिश्तेदार पड़ोसी की मुक़ाबले में इस्तेमाल हुआ है, जिसका मतलब है ऐसा पड़ोसी जो रिश्तेदार न हो, यानी यह कि पड़ोसी से पड़ोसी के रूप में प्रेम व्यवहार (सुलूक) किया जाये, वह रिश्तेदार हो या रिश्तेदार न हो, जिस तरह से हदीस में भी इस बात पर बड़ा ज़ोर देकर बयान किया गया है।

وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿38﴾

३८. और जो लोग अपना माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं और अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिसका संगी-साथी शैतान हो वह बहुत बुरा साथी है।

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿39﴾

३९. और भला उनका क्या नुक़सान (हानि) था अगर यह अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर ईमान लाते और अल्लाह (तआला) ने जो उन्हें अता कर रखा है, उस में से ख़र्च करते, अल्लाह (तआला) उन्हें अच्छी तरह से जानने वाला है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿40﴾

४०. बेशक, अल्लाह (तआला) एक ज़र्रे के बराबर ज़ुल्म नहीं करता, और अगर नेकी हो तो उसे दुगुना कर देता है, और ख़ास तौर से अपने पास से बहुत बड़ा अजर अता (प्रदा) करता है।

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿41﴾

४१. तो क्या हाल होगा जिस वक़्त हर उम्मत में से एक गवाह हम लायेंगे और आप को उन लोगों पर गवाह बनाकर लायेंगे।[1]

يَوْمَىِٕذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ۭ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿42﴾

४२. जिस दिन काफ़िर और रसूल के नाफ़रमान यह तमन्ना करेंगे कि काश उन्हें ज़मीन के साथ बराबर कर दिया जाता और अल्लाह (तआला) से कोई बात न छिपा सकेंगे।

The Ummah Technology Mission

---

[1] हर उम्मत का पैग़म्बर (सन्देष्टा) अल्लाह के दरबार में गवाही देगा "हे अल्लाह ! हम ने तो तेरा पैग़ाम अपनी क़ौम तक पहुँचा दिया था, अब उन्होंने नहीं माना तो इसमें हमारी क्या ख़ता है?" फिर उन पर नबी करीम ﷺ गवाही देंगे "हे अल्लाह! यह सच कहते हैं।" आप ﷺ यह गवाही उस क़ुरआन के ज़रिये देंगे जो आप पर उतरा और जिस में पहले के नबियों और उनकी क़ौमों के हादसे ज़रूरत के ऐतबार से बयान हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنتُمْ سُكَارَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا ۚ وَإِن كُنتُم مَّرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنكُم مِّنَ الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا (43)

४३. हे ईमानवालो ! अगर तुम नशे में धुत हो तो नमाज के क़रीब न जाओ[1] जब तक कि अपनी बात समझने न लगो, और जनाबत (की हालत में जब तक ग़ुस्ल न कर लो[2] हाँ, अगर राह चलते गुजर जाने वाले हो तो और बात है, और अगर तुम रोगी हो, या सफ़र में हो या तुम में से कोई शौच से आया हो या तुम ने औरतों के साथ जिमाअ किया हो और तुम्हें पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो और अपने मुँह और अपने हाथ मल लो ।[3] बेशक अल्लाह (तआला) बहुत माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है ।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَن تَضِلُّوا السَّبِيلَ (44)

४४. क्या तुम ने उन्हें नही देखा जिन्हें किताब का कुछ भाग दिया गया? वह गुमराही ख़रीदते हैं और चाहते हैं कि तुम भी गुमराह हो जाओ ।

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكَفَىٰ بِاللَّهِ نَصِيرًا (45)

४५. और अल्लाह (तआला) तुम्हारे दुश्मनों को अच्छी तरह से जानने वाला है और अल्लाह (तआला) का दोस्त होना ही काफ़ी है और अल्लाह (तआला) का मददगार होना बस है ।

The Ummah Technology Mission

---

[1] यह हुक्म उस वक़्त दिया गया था, जब तक शराब हराम नहीं की गयी थी । इसलिए एक दावत में शराब पीने के बाद जब नमाज के लिए खड़े हुए तो नशे में क़ुरआन के लफ़्ज भी इमाम साहब ग़लत पढ़ गये। (तफ़सील के लिए देखिए तिर्मिजी, तफ़सीर सूर: अन-निसा) जिस पर यह आयत उतरी कि नशे की हालत में नमाज न पढ़ा करो, यानी उस समय तक नमाज के वक़्त शराब पीना हराम किया गया था, पूरी तरह हराम और मना होने का हुक्म बाद में उतरा ।

[2] यानी नापाकी की हालत में भी नमाज न पढ़ो, क्योंकि नमाज के लिए पाकीजगी जरूरी है ।

[3] रोगी से मुराद वह रोगी है जिसे पानी के इस्तेमाल से नुक़सान या रोग के बढ़ जाने का डर हो (२) आम मुसाफ़िर, लम्बा सफ़र हो या छोटा, अगर पानी मुयस्सर न हो तो उसे तयम्मुम करने का हुक्म है । पानी न मिलने की हालत में यह हुक्म निवासी (मोक़ीम) को भी है, लेकिन रोगी और मुसाफ़िर को चूँकि इस तरह की हालत आम तौर से आती थी इसलिए ख़ास तौर से उन के लिए हुक्म को बयान कर दिया गया है (३) शौच (क़जाये हाजत) से आने वाला (४) और बीवी के साथ जिमाअ करने वाला, उनको भी पानी न मिलने की हालत में तयम्मुम करके नमाज पढ़ने का हुक्म है ।

مِنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَرَاعِنَا لَيًّا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّينِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ وَلَٰكِن لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿46﴾

४६. कुछ यहूदी कलाम को उनके सही मुकाम से फेर बदल कर देते हैं और कहते हैं कि हम ने सुना और नाफ़रमानी की और सुन उस के बिना कि तू सुना जाये और हमारी तावेदारी कुबूल करो (लेकिन इस के कहने में) अपनी ज़ुबान मरोड़ लेते हैं और दीन को कलंकित करते हैं, और अगर यह लोग कहते कि हम ने सुना और हम ने मान लिया और आप सुनिये और हमें देखिये तो यह उनके लिए बहुत अच्छा था और ज़्यादा बेहतर था, लेकिन अल्लाह (तआला) ने उन के कुफ्र की वजह से उन पर लानत की है तो यह बहुत कम ईमान लाते हैं।[1]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ آمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُم مِّن قَبْلِ أَن نَّطْمِسَ وُجُوهًا فَنَرُدَّهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ السَّبْتِ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿47﴾

४७. हे अहले किताव ! जो कुछ हम ने उतारा है, जो उस की तसदीक़ करने वाला है जो तुम्हारे पास है, इस पर उससे पहले ईमान लाओ कि हम चेहरे बिगाड़ दें और उन्हें घुमा कर पीठ की तरफ़ कर दें या उन पर लानत भेजें, जैसाकि हम ने शनिवार वाले दिन के लोगों पर लानत की है और अल्लाह (तआला) का फ़ैसला ज़रूर पूरा किया हुआ है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ﴿48﴾

४८. बेशक अल्लाह (तआला) अपने साथ शिर्क किये जाने को माफ़ नहीं करता और इस के सिवाय जिसे चाहे माफ़ कर दे,[2] और जो अल्लाह (तआला) के साथ शिर्क करे उस ने अल्लाह पर भारी आरोप घड़ा।[3]

The Ummah Technology Mission

---

[1] यानी ईमान लाने वाले बहुत थोड़े हैं, जैसा कि पहले बयान हो चुका है कि यहूदियों में से ईमान लाने वालों की संख्या दस तक भी नहीं पहुँची, या यह मतलब है कि बहुत कम बातों पर ईमान लाते हैं, जब कि फ़ायदेमंद ईमान यह है कि सब बातों पर ईमान लाया जाये।

[2] यानी ऐसे गुनाह जिन से ईमान वाले माफ़ी मागें बिना मर जायें, अल्लाह तआला अगर किसी को चाहे तो बिना सज़ा दिये माफ़ कर देगा, बहुत से लोगों को सज़ा देने के बाद और बहुत से लोगों को नबी ﷺ की शिफ़ाअत (सिफ़ारिश) पर माफ़ कर देगा, लेकिन शिर्क किसी भी हालत में माफ़ नहीं होगा क्योंकि मुशरिक पर अल्लाह तआला ने जन्नत हराम कर दिया है।

[3] दूसरी जगह फ़रमाया (إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ) (लुकमान) "शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है।" हदीस में इसे बहुत बड़ा गुनाह कहा गया है "أكبر الكبائر الشرك بالله"।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنفُسَهُمْ ۚ بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا (49)

४९. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जो अपनी पाकीज़गी (और तारीफ़) ख़ुद करते हैं? बल्कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे पाक करता है, और वे एक धागे बराबर भी ज़ुल्म न किये जायेंगे।

انظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۖ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا (50)

५०. देखो यह लोग अल्लाह (तआला) पर किस तरह झूठा इल्ज़ाम लगाते हैं, और यह बड़े गुनाह के लिये बहुत है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَٰؤُلَاءِ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا سَبِيلًا (51)

५१. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जिन्हें किताब का कुछ हिस्सा मिला है, जो मूर्तियों पर और झूठे देवों पर ईमान रखते हैं, और काफ़िरों के हक़ में कहते हैं कि यह लोग ईमानवालों से ज़्यादा सच्चे रास्ते पर हैं?

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَمَن يَلْعَنِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا (52)

५२. यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह (तआला) ने लानत की है और जिसे अल्लाह (तआला) लानती कह दे तो तू किसी को उसका मदद करने वाला नहीं पायेगा।

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذًا لَّا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا (53)

५३. क्या उनका कोई हिस्सा मुल्क में है? अगर ऐसा हो तो फिर यह किसी को एक खजूर की गुठली की फांक के बराबर भी कुछ न देंगे।

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۖ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُم مُّلْكًا عَظِيمًا (54)

५४. या यह लोगों से हसद रखते हैं, उस पर जो अल्लाह (तआला) ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें अता किया है तो हम ने तो इब्राहीम की औलाद को किताब और हिक्मत भी अता किया और बड़ा मुल्क भी अता किया।

فَمِنْهُم مَّنْ آمَنَ بِهِ وَمِنْهُم مَّن صَدَّ عَنْهُ ۚ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا (55)

५५. फिर उन में से कुछ ने तो उस किताब को माना और कुछ उस से रुक गये[1] और जहन्नम का जलाना काफ़ी है।

---

[1] यानी इस्राईल की औलाद को जो हज़रत इब्राहीम के ख़ानदान और क़बीला में से हैं, हम ने नबूवत भी दी और बड़ा मुल्क और हुकूमत भी, फिर भी यह सभी यहूदी उन पर ईमान नहीं लाये कुछ ईमान लाये और कुछ रुक गये। मतलब यह है कि हे मोहम्मद ﷺ अगर यह आप पर ईमान नहीं ला रहे हैं तो यह कोई अनोखी बात नहीं है, इनकी तो तारीख़ ही नबियों को झुठलाने से भरी पड़ी है, यहाँ तक कि यह तो अपने वंश के नबियों पर भी ईमान नही लाये।

The Ummah Technology Mission

**५६.** जिन लोगों ने हमारी आयतों का इंकार किया उन्हें हम जरूर आग मे डाल देंगे, जब उन की खालें (चर्म) पक जायेंगी, हम उन के अलावा और खालें बदल देंगे, ताकि वह अज़ाब का मज़ा चखते रहें, बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا ۖ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُم بَدَّلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿56﴾

**५७.** और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल किये, हम क़रीब मुस्तक़बिल में उन्हें उन जन्नतों में ले जायेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में वे हमेशा रहेंगे, उन के लिए वहाँ पाक बीवियाँ होंगी और हम उन्हें घनी छाँव (पूरी आरामदायक जगह) में ले जायेंगे।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَّهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۖ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا ﴿57﴾

**५८.** अल्लाह (तआला) तुम्हें हुक्म देता है कि अमानत (धरोहर) उन के मालिकों को पहुँचा दो, और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो तो अदल के साथ फ़ैसला करो,[1] बेशक वह अच्छी बात है जिसकी शिक्षा अल्लाह (तआला) तुम्हें दे रहा है, बेशक अल्लाह (तआला) सुनने वाला देखने वाला है।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُم بَيْنَ النَّاسِ أَن تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُم بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿58﴾

**५९.** हे ईमानवालो! अल्लाह के हुक्म की पैरवी करो और रसूल (ﷺ) की और अपने में से हाकिमों के हुक्म को मानो, फिर अगर किसी बात में एख़्तिलाफ़ करो तो उसे लौटाओ अल्लाह (तआला) और रसूल (ﷺ) की तरफ़, अगर तुम्हें अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान है, यह सब से अच्छा है और नतीजा के ऐतबार से बहुत अच्छा है।[2]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ ۖ فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿59﴾

The Ummah Technology Mission

---

[1] इस में हाकिमों को ख़ास तौर से इंसाफ़ करने का हुक्म दिया गया है। एक हदीस में है हाकिम जब तक ज़ुल्म न करे, अल्लाह तआला उसके साथ होता है, जब वह ज़ुल्म करना शुरू कर देता है, अल्लाह उसको उसकी इन्द्रियों (नफ़्स) को सौंप देता है। (सुनन इब्ने माजा, किताबुल अहकाम)

[2] अल्लाह की ओर लौटाने से मुराद क़ुरआन करीम तथा रसूल ﷺ से है, अब रसूल ﷺ की हदीस

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ ۖ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا (60)

६०. क्या! आप ने उन्हें नही देखा जिसका ख़्याल है कि जो कुछ आप पर और जो कुछ आप से पहले उतारा गया है, उस पर उनका ईमान है, लेकिन वह अपने फ़ैसले अल्लाह के सिवाय दूसरों के पास ले जाना चाहते हैं, अगरचे उन्हें हुक्म दिया गया है कि वह उनका (शैतान का) इंकार करें? शैतान तो यह चाहता है कि उन्हें भटका कर दूर डाल दे।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا (61)

६१. और उन से जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) ने जो (पाक किताब) उतारा है उसकी तरफ़ और रसूल की तरफ़ आओ, तो आप देखेंगे कि यह मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) आप से मुंह फेर कर रुक जाते हैं।[1]

فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا (62)

६२. फिर क्या वजह है कि जब उन पर उनके अमल की वजह से कोई मुसीबत आ पड़ती है, तो फिर यह आप के पास आकर अल्लाह (तआला) की क़सम (शपथ) लेते हैं कि हमारा इरादा तो सिर्फ़ भलाई और अच्छा तअल्लुक ही का था।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا (63)

६३. यह वह लोग हैं जिन के दिलों का भेद अल्लाह (तआला) को अच्छी तरह मालूम है, आप उन से अनसुनी कीजिये, और उन्हें तालीम देते रहिए और उन्हें वह बात कहिए जो उन के दिलों में घर करने वाली हो।

The Ummah Technology Mission

---

है, यह आपसी एख़्तिलाफ़ ख़त्म करने के लिए एक सब से अच्छा क़ानून बताया गया है, इस क़ानून से भी वाजेह होता है कि तीसरे इंसान का हुक्म मानना ज़रूरी नही है।

[1] यह आयत ऐसे लोगों के बारे में उतरी है, जो अपना फ़ैसला कराने के लिए मोहम्मद ﷺ की अदालत में ले जाने के बजाय यहूदियों के मुखिया या क़ुरैश के मुखिया के पास ले जाना चाहते थे, लेकिन यह हुक्म आम लोगों के लिए है और इस में सभी वह लोग शामिल हैं जो क़ुरआन और सुन्नत के ख़िलाफ़ अपने फ़ैसले के लिए इन दोनों को छोड़ कर दूसरों की तरफ़ जाते हैं।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَاۗءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿64﴾

६४. और हम ने हर रसूल को सिर्फ़ इसीलिए भेजा कि अल्लाह (तआला) के हुक्म से उस के हुक्म की पैरवी की जाये और अगर यह लोग जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया तेरे पास आ जाते, और अल्लाह (तआला) से तौबा करते और रसूल भी उन के लिए माफ़ी तलब करते, तो बेशक यह लोग अल्लाह तआला को माफ़ करने वाला रहम करने वाला पाते।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰي يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَھُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِــيْمًا ﴿65﴾

६५. तो क़सम है तेरे रब की! यह (तब तक) ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि सभी आपस के एख़्तिलाफ़ में आप को फ़ैसला करने वाला न क़ुबूल कर लें, फिर जो फ़ैसला आप कर दें उन से अपने दिलों में ज़रा भी तंगी और नाख़ुशी न पायें और फ़रमाबरदार की तरह क़ुबूल कर लें।

وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْھُمْ ۭ وَلَوْ اَنَّھُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّھُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا ﴿66﴾

६६. और अगर हम उन पर यह फ़र्ज़ कर देते कि अपने आप को क़त्ल कर लो या अपने घरों से निकल जाओ, तो उसे उन में से बहुत ही कम लोग पालन करते, और अगर यह वही करें जिसकी उन्हें तालीम दी जाती है, तो ज़रूर ही उन के लिए बहुत अच्छा होता और बहुत ज़्यादा मज़बूत होता।

وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰھُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿67﴾

६७. और तब तो हम उन्हें अपने पास से बहुत सवाब अता करते।

وَّلَهَدَيْنٰھُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿68﴾

६८. और बेशक उन्हें सत्य सीधा रास्ता अता कर देते।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰۗىِٕكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاۗءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰۗىِٕكَ رَفِيْقًا ﴿69﴾

६९. और जो भी अल्लाह (तआला) और रसूल (ﷺ) के हुक्म की पैरवी करे, वह उन लोगों के साथ होगा, जिन पर अल्लाह (तआला) ने अपनी नेमतें की है, जैसे नबियों, सिद्दीकों, शहीदों और नेक लोगों के (साथ), यह अच्छे साथी हैं।

The Ummah Technology Mission

ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿70﴾

७०. यह अल्लाह (तआला) की तरफ़ से फ़ज़्ल है और अल्लाह (तआला) ही काफ़ी जानकार है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿71﴾

७१. हे मुसलमानो! अपने वचाव का सामान ले लो,[1] फिर गिरोह-गिरोह वनकर प्रस्थान करो या सव के सब एक साथ प्रस्थान करो।

وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ﴿72﴾

७२. और वेशक तुम में कुछ ऐसे भी हैं जो संकोच (तरद्दुद) करते हैं[2] फिर अगर तुम्हें कोई नुक़सान होता है तो कहते हैं कि अल्लाह (तआला) ने मुझ पर बड़ी नेमत की कि मैं उनके साथ मौजूद नहीं था।

وَلَىِٕنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿73﴾

७३. और अगर तुम को अल्लाह (तआला) का कोई फ़ज़्ल हासिल हो जाये तो जैसे कि तुम में और उन में रिश्ता था ही नहीं, कहते हैं कि काश! मैं भी उन के साथ होता तो बड़ी कामयाबी को पहुँच जाता।

فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۭ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿74﴾

७४. लेकिन जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के वदले बेच चुके हैं, उन्हें अल्लाह (तआला) की राह में जिहाद करना चाहिए और जो अल्लाह (तआला) की राह में जिहाद करते हुए शहीद हो जाये या विजयी हो जाये तो बेशक हम उसे बहुत अच्छा बदला अता करेंगे।

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاۗءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ڌ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ﴿75﴾

७५. भला क्या वजह है कि तुम अल्लाह की राह में और उन कमज़ोर मर्दों, औरतों और नन्हे-नन्हे बच्चों के छुटकारे के लिए जिहाद न करो? जो इस तरह से दुआ कर रहे हैं कि हे हमारे रब! इन ज़ालिमों की बस्ती से हमें निकाल दे और हमारे लिए ख़ुद अपने पास से हिमायती मुक़र्रर कर और हमारे लिए ख़ास तौर से अपने

---

[1] अपना वचाव करो, अस्त्र-शस्त्र (हथियार) और जंग का सामान और दूसरे साधन (ज़रिये) से।

[2] यह मुनाफ़िक़ों का बयान है। संकोच का मतलब जिहाद में जाने से कतराते और पीछे रह जाते हैं।

The Ummah Technology Mission

पास से सहायक बना ।[1]

७६. जो लोग ईमान लाये हैं, वह तो अल्लाह (तआला) की राह में जिहाद करते हैं और जिन लोगों ने कुफ़्र किया है वह तो तागूत की राह में लड़ते हैं बस,[2] तुम शैतान के दोस्तों से जंग करो, यक़ीन करो कि शैतान की चाल (बिल्कुल कमज़ोर और) बहुत कमज़ोर है ।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا (76)

७७. क्या तुम ने उन्हें नहीं देखा जिन्हें हुक्म दिया गया कि अपने हाथों को रोके रखो और नमाज़ें पढ़ते रहो और ज़कात अदा करते रहो, फिर जब उन्हें जिहाद का हुक्म दिया गया तो उसी वक़्त उनका एक गिरोह लोगों से इस तरह डरा हुआ था जैसे अल्लाह (तआला) का डर हो, बल्कि इससे भी अधिक। और कहने लगे, हे हमारे रब! तूने हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ किया?[3] क्यों हमें थोड़ी ज़िन्दगी और न गुज़ारने दिया? आप कह दीजिए कि दुनिया का फ़ायेदा तो बहुत कम है और परहेज़गारों के लिए आख़िरत बेहतर है, और तुम एक धागे के बराबर भी ज़ुल्म न किये जाओगे ।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۗ وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا (77)

---

[1] ज़ालिमों की बस्ती से (आयत के उतरने के आधार पर) मुराद मक्का है। हिजरत के बाद वहां बाक़ी रह जाने वाले मुसलमान ख़ास तौर से बूढ़े मर्द, औरत और बच्चे काफ़िरों के ज़ुल्म से तंग आकर अल्लाह के दरबार में मदद की दुआ करते थे, अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ख़बरदार किया कि तुम مستضعفين (ऊपर बयान कमज़ोर इंसानों) को काफ़िरों से आज़ाद कराने के लिए जिहाद क्यों नहीं करते?

[2] मुसलमान और काफ़िर दोनों को जंग की ज़रूरत होती है, लेकिन दोनों के जंग के मक़सद में बड़ा फ़र्क़ है। मुसलमान अल्लाह के लिए लड़ता है, सिर्फ़ दुनिया या मुल्क बढ़ाने के लिए नहीं, जब कि काफ़िर का मक़सद यही दुनिया और उस के फ़ायदे होते हैं।

[3] मक्के में मुसलमान चूँकि तादाद और संसाधन की कमी की वजह से लड़ने के लायक़ नहीं थे, इसलिए उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ उन्हें जंग से रोके रखा गया, और दो बातों पर ज़ोर दिया जाता रहा, एक यह कि काफ़िरों के ज़ुल्म को सब्र और हिम्मत से बरदाश्त करें और माफ़ी और हौसले से ही काम लें। दूसरे यह कि नमाज़, ज़कात और दूसरी इबादत और तालीम के हिसाब से अमल करें ताकि अल्लाह तआला से रिश्ता मज़बूत बुनियादों पर क़ायम हो, लेकिन हिजरत के बाद मदीने में जब मुसलमानों की ताक़त जमा हो गयी तो फिर उन्हें लड़ने की इजाज़त दी गयी।

The Ummah Technology Mission

اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ﴿78﴾

**७८.** तुम जहां कहीं भी होगे मौत तुम्हें आ पकड़ेगी चाहे तुम मजबूत किलों में हो, और अगर इन्हें कोई भलाई मिलती है तो कहते हैं कि यह अल्लाह (तआला) की तरफ से है, और अगर कोई बुराई पहुँचती है, तो कह उठते हैं कि यह तेरी ओर से है।[1] उन्हें कह दो, यह सब कुछ अल्लाह (तआला) की तरफ़ से हैं, उन्हें क्या हो गया है कि कोई बात समझने के क़रीब भी नहीं?

مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ؗ وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿79﴾

**७९.** तुझे जो भलाई मिलती है वह अल्लाह (तआला) की तरफ से है और जो बुराई पहुँचती है वह तेरे अपने ख़ुद की तरफ़ से है, हम ने तुझे मानव जाति के लिए रसूल बनाकर भेजा है और अल्लाह (तआला)गवाह काफी है।

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ﴿80﴾

**८०.** इस रसूल (ﷺ) की जो इताअत करे उसी ने अल्लाह (तआला) की इताअत की और जो मुँह फेर ले तो हम ने आप को कोई उन पर रक्षक (निगराँ) बना कर नहीं भेजा।

وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ؗ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿81﴾

**८१.** और यह कहते तो हैं कि इताअत है, फिर जब आप के पास से उठ कर बाहर निकलते हैं तो उन में का एक गुट जो बात आप ने या उसने कही है उसके ख़िलाफ़ रातों को विचार-विमर्श (राय-मश्विरा) करता है,[2] उन की रातों की बातचीत अल्लाह (तआला) लिख रहा है, आप उन से मुँह फेर लें और अल्लाह तआला पर भरोसा रखें, अल्लाह तआला काफ़ी काम बनाने वाला है।

The Ummah Technology Mission

---

[1] यहाँ से फिर से मुनाफ़िक़ों की बातों का बयान हो रहा है।

[2] यह मुनाफ़िक़ीन आप के पास जो बातें ज़ाहिर करते हैं, रातों को इस के ख़िलाफ़ बातें करते हैं और साजिश करते हैं। आप ﷺ उन से बचें और अल्लाह पर भरोसा करें, इनकी साजिश आप को नुक़सान नहीं पहुँचा सकती, क्योंकि आप का निगहबान और कामों को बनाने वाला अल्लाह है।

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ﴿82﴾

८२. क्या यह लोग क़ुरआन पर विचार नहीं करते? अगर यह अल्लाह (तआला) के सिवाय किसी दूसरे की तरफ़ से होता तो बेशक इस में बहुत कुछ इख़्तिलाफ़ पाते ।[1]

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ ۖ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَىٰ أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ ۗ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿83﴾

८३. और जहाँ उन को कोई ख़बर अमन या डर की मिली कि उन्होंने उसका प्रचार करना शुरू कर दिया, और अगर ये लोग उसे रसूल (ﷺ) के और अपने में से ऐसी बातों के ज़रिये तक पहुचने वालों के हवाले कर देते, तो इस की हक़ीक़त वह लोग मालूम कर लेते जो नतीजा मालूम करने की अक़्ल रखते हैं और अगर अल्लाह (तआला) का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो कुछ इंसानों के सिवाय तुम सभी शैतान के पैरोकार बन जाते ।

فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ ۚ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنْكِيلًا ﴿84﴾

८४. तो तू अल्लाह तआला की राह में जिहाद करता रह, तुझे सिर्फ़ तेरे लिए ही हुक्म दिया जाता है । हाँ, ईमानवालों को आकर्षित (मुतवज्जिह) करता रह, बहुत मुमकिन है कि अल्लाह (तआला) काफ़िरों के हमले को रोक दे और अल्लाह (तआला) बहुत ताक़त वाला है और सज़ा देने में भी बहुत सख़्त है ।

مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا ۖ وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُقِيتًا ﴿85﴾

८५. जो इंसान किसी सवाब और भले काम करने की सिफ़ारिश करे, उसे भी उसका कुछ हिस्सा मिलेगा और जो बुराई और बुरे काम करने की सिफ़ारिश करे, उस के लिए भी उस में से

---

[1] क़ुरआन करीम से हिदायत हासिल करने के लिए उस में ग़ौर करने पर ज़ोर दिया जा रहा है और उसकी सच्चाई जाँचने के लिए एक स्तर (मेयार) भी बताया जा रहा है कि अगर यह किसी इंसान के ज़रिये लिखा हुआ होता (जैसा कि काफ़िरों का ख़्याल है) तो इसके विषय और बयान किये गये हादसों में टकराव और एख़्तिलाफ़ होता, क्योंकि यह एक छोटी किताब नहीं है । एक बड़ी और तफ़सीली किताब है, जिसका हर हिस्सा मोजिज़ा और अदब में बेमिसाल है, जबकि इंसान के ज़रिये बनाई किताब में ज़ुबान का मेयार और उसकी कोमलता और सरलता स्थिर (कायम) नहीं रहती ।

The Ummah Technology Mission

एक हिस्सा है और अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

وَإِذَا حُيِّيتُم بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ﴿86﴾

८६. और जब तुम्हें सलाम किया जाये तो उस से अच्छा जवाब दो, या उन्हीं लफ़्ज़ों को पलट दो, बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है।

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۗ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ﴿87﴾

८७. अल्लाह वह है, जिस के सिवाय कोई (सच्चा) माबूद नहीं, वह तुम सब को ज़रूर क़यामत के दिन जमा करेगा, जिस के (आने) में कोई शक नहीं, अल्लाह (तआला) से ज़्यादा सच किस की बात होगी।

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِئَتَيْنِ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُم بِمَا كَسَبُوا ۚ أَتُرِيدُونَ أَن تَهْدُوا مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ ۖ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ﴿88﴾

८८. तुम्हें क्या हो गया है कि मुनाफ़िक़ों के बारे में दो गुट हो रहे हो?[1] उन्हें तो उन के अमलों की वजह से अल्लाह (तआला) ने औंधा कर दिया है। अब क्या तुम यह चाहते हो कि उसे राह दिखाओ, जिसे अल्लाह ने गुमराह कर दिया है, तो जिसे अल्लाह गुमराह कर दे कभी तुम उस के लिए कोई राह न पाओगे।

وَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً ۖ فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَإِن تَوَلَّوْا فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَدتُّمُوهُمْ ۖ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿89﴾

८९. वह तमन्ना करते हैं कि जैसे काफ़िर वे हैं तुम भी उनकी तरह ईमान का इंकार करने लगो और तुम सभी बराबर बन जाओ, इसलिए उनमें से किसी को हक़ीक़ी दोस्त न बनाओ[2] जब तक वह अल्लाह की राह में हिजरत न करें, फिर अगर (इस से) मुंह फेरें तो उन्हें पकड़ो[3] और क़त्ल करो जहाँ पाओ। होशियार! उन में से किसी को दोस्त और मददगार न समझ बैठो।

---

[1] यह सवाल इंकार के लिए है यानी तुम्हारे बीच इन मुनाफ़िक़ों के बारे में एख़्तिलाफ़ नहीं होना चाहिए था, इन मुनाफ़िक़ों से मुराद वह लोग हैं जो ओहद की जंग के वक़्त मदीना शहर के बाहर कुछ दूर जाने के बाद वापस आ गये थे कि हमारी बात नहीं मानी गयी।

[2] हिजरत (इस्लाम के लिए देश छोड़ना) इस बात का सुबूत है कि अब यह ख़ालिस मुसलमान बन गये हैं, इस हालत में दोस्ती और मुहब्बत जायेज़ होगी।

[3] यानी जब तुम्हें उन पर वश और हक़ हासिल हो जाये।

The Ummah Technology Mission

إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَن يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ ۚ فَإِنِ اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَأَلْقَوْا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ﴿90﴾

९०. लेकिन जो उस क़ौम से रिश्ता रखते हों जिनके और तुम्हारे बीच सुलह हो चुकी हो या जो तुम्हारे पास आयें तो उन के दिल तंग हो रहे हों कि तुम से लड़ें, और अपनी क़ौम से लड़ें, और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर क़ूवत अता कर देता और वह जरूर तुम से लड़ते, तो अगर वह तुम से अलग रहें और लड़ाई न करें और तुम्हारी ओर सलामती का पैग़ाम पेश करें, तो (फिर) अल्लाह ने तुम्हारे लिये उन पर कोई राह जंग की नहीं बनाई है।

سَتَجِدُونَ آخَرِينَ يُرِيدُونَ أَن يَأْمَنُوكُمْ وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلَّمَا رُدُّوا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا فِيهَا ۚ فَإِن لَّمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوا أَيْدِيَهُمْ فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ ۚ وَأُولَٰئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿91﴾

९१. तुम कुछ दुसरों को पाओगे जो तुम से और अपनी क़ौम से महफ़ूज रहना चाहते हैं, और जब कभी वह फ़ितना[1] की तरफ़ फेरे जाते हैं तो उस में औंधे मुहं पड़ जाते हैं, अगर वह तुम से अलग न रहें और तुम से सुलह न करें और अपने हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ो और जहाँ पाओ क़त्ल करो, यही वह हैं जिन पर हम ने तुम को खुली हुज्जत दिया है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَن يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَأً ۚ وَمَن قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَن يَصَّدَّقُوا ۚ فَإِن كَانَ مِن قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ

९२. किसी मुसलमान के लिये जायेज नहीं कि किसी मुसलमान का क़त्ल कर दे, लेकिन चूक से हो जाये (तो और बात है) और जो इंसान किसी मुसलमान का क़त्ल चूक से कर दे[2] तो उस पर एक मुसलमान ग़ुलाम (या दासी) आजाद करना और मक़तूल के रिश्तेदारों को खून की क़ीमत देना है।[3] लेकिन यह और बात

---

[1] फ़ितना से मुराद शिर्क भी हो सकता है। اركسوا فيها उसी शिर्क में लौटा दिये जाते, या फ़ितना से मुराद लड़ाई है कि जब उन्हें मुसलमानों के साथ लड़ने के लिए बुलाया या लौटाया जाता है, तो वह उस पर तैयार हो जाते हैं।

[2] ग़लती की वजह और हालात कई एक हो सकती हैं, मक़सद है कि ख़्याल और इरादा क़त्ल करने का न हो, लेकिन किसी वजह से क़त्ल हो जाये।

[3] यह ग़लती से क़त्ल के गुनाह की सजा का बयान हो रहा है, जो दो रूप में है। एक कफ़्फ़ारा और तौबा के रूप में है, या एक मुसलमान ग़ुलाम को आजाद करना और दूसरे इंसानी हुक़ूक़ के रूप में है, और वह है दियत (ख़ून की क़ीमत) मरने वाले के ख़ून के बदले मरने वाले के वारिसों को जो कुछ भी दिया जाये, वह दियत है। और दियत की मिक़दार हदीसों की बुनियाद

The Ummah Technology Mission

وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿92﴾

है कि वह माफ कर दें, और अगर वह मक़तूल तुम्हारे दुश्मन क़ौम से हो और मुसलमान हो तो एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करना ज़रूरी है, और अगर मक़तूल उस क़ौम से है जिसके और तुम्हारे (मुसलमानों के) बीच सुलह है तो ख़ून की क़ीमत उसके रिश्तेदारों को अदा करना है और एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करना भी है, और जो न पाये उस को दो महीने लगातार रोज़ा रखना है[1] अल्लाह से माफ करवाने के लिए, और अल्लाह जानने वाला व हिक्मत वाला है।

وَمَن يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ﴿93﴾

९३. और जो कोई किसी मुसलमान को जान-बूझ कर क़त्ल कर डाले उसकी सज़ा जहन्नम है, जिस में वह हमेशा रहेगा, उस पर अल्लाह (तआला) का ग़ज़ब है।[2] उसे अल्लाह (तआला)

---

पर सौ ऊंट या उसके बराबर नगद सोना, चाँदी या रूपया के रूप में होगी।

**टिप्पणी** : ध्यान रहे कि जान बूझ कर क़त्ल में ख़ून का बदला ख़ून है (जिसे क़सास कहते हैं) या सज़ा के तौर पर दियत है, और सज़ा के तौर पर दियत की मिक़दार सौ ऊंट है जो उम्र और सेहत के हिसाब से तीन तरह का होना चाहिए, जबकि भूल-चूक में क़त्ल होने से सिर्फ़ दियत है, क़िसास नहीं है।

[1] यानी अगर ग़ुलाम आज़ाद करने की ताक़त न हो तो पहली हालत और इस आख़िरी हालत में दियत के साथ लगातार (बिना नाग़ा) के दो माह रोज़े हैं, अगर बीच में नाग़ा हो गया तो पुन: नये सिरे से रोज़े रखने ज़रूरी होंगे, लेकिन दीनी वजह से नाग़ा हो जाने पर नये सिरे से रोज़ा रखने की ज़रूरत नहीं है। जैसे माहवारी, प्रसव रक्त या कठिन रोग की वजह से रोज़ा रखने में रुकावट हो, सफ़र को दीनी वजह मानने में एख़्तिलाफ़ है। (इब्ने कसीर)

[2] यह जान बूझकर किये गये क़त्ल की सज़ा है। क़त्ल तीन तरह का होता है : (१) अनजाने में क़त्ल (जिसका बयान इस आयत से पहली आयत में है) (२) जान बूझकर क़त्ल की तरह (जो हदीस से साबित है) (३) जान बूझकर क़त्ल, जिसका मतलब है किसी का इरादये क़त्ल से क़त्ल किया गया हो, और इसके लिए उस साधन तंत्र का इस्तेमाल करना जिससे आम तौर पर क़त्ल किया जाता है, जैसे तलवार, भाला वग़ैरह। इस आयत में मुसलमान के क़त्ल पर बहुत सख़्त चेतावनी (तंबीह) दी गयी है जैसे : इसकी सज़ा जहन्नम है, जिसमें हमेशा रहना होगा, इसके सिवाय अल्लाह तआला का ग़ज़ब और उसकी लानत और बहुत बड़ा अज़ाब भी होगा, इतनी सख़्त सज़ा एक ही वक़्त में किसी दूसरे गुनाह में बयान नहीं की गई हैं, जिससे यह वाज़ेह होता है कि एक मुसलमान का क़त्ल अल्लाह तआला के यहाँ कितना सख़्त गुनाह है।

The Jannah Technology Mission

ने लानत की है और उस के लिए बहुत बड़ी सज़ा तैयार कर रखी है।

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ۭ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا (٩٤)

९४. हे ईमानवालो ! जब तुम अल्लाह की राह में जा रहे हो तो जांच-पड़ताल कर लो और जो तुम से सलाम अलैक कहे तुम उसे यह न कहो कि तू ईमानवाला नहीं। तुम दुनियावी ज़िन्दगी के असबाब की खोज में हो तो अल्लाह (तआला) के पास बहुत से सुख के असबाब हैं, पहले तुम भी ऐसे ही थे, फिर अल्लाह (तआला) ने तुम पर एहसान किया, इसलिए तुम ज़रूर खोज (छानबीन) कर लिया करो, बेशक अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमलों को अच्छी तरह जानता है।

لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَ الْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ۭ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۭ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا (95)

९५. जो मुसलमान बिला वजह बैठे रहें और जो अल्लाह की राह में अपने तन-धन के साथ जिहाद करते हों बराबर न होंगे, अल्लाह ने उन्हें जो अपने मालों और जानों के साथ जिहाद करते हैं उन पर जो बैठ रहते हैं दर्जों में फ़ज़ीलत दी है और वैसे तो हर एक को शुभवचन[1] दिया है, लेकिन अल्लाह ने जो जिहाद करने वाले हैं उनको बैठे रहने वालों पर बड़े अज्र की फ़ज़ीलत दी है।

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (96)

९६. अपनी तरफ़ से दर्जे की भी, माफ़ी की भी और रहम की भी, और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

---

हदीस में भी इसकी कड़ी आलोचना और इस पर सख़्त चेतावनी का बयान है।

[1] यानी तन, मन और धन से जिहाद करने वालों को जो मुकाम हासिल होगा, जिहाद में हिस्सा न लेने वाले जबकि इस से महरूम रहेंगे, फिर भी अल्लाह तआला ने दोनों को भलाई का वादा किया है। इस से आलिमों ने यह मतलब निकाला है कि आम हालतों में जिहाद फ़र्ज़ नहीं, ज़रूरत के मुताबिक़ फ़र्ज़ है यानी अगर आवश्यकतानुसार लोग जिहाद में हिस्सा ले लें तो उस इलाके के दूसरे लोगों की ओर से इस फ़र्ज़ की अदायगी समझी जायेगी।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ ۖ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا ۚ فَأُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿97﴾

९७. जो लोग अपने आप पर जुल्म करने वाले हैं, जब फ़रिश्ते उनकी जान निकालते हैं तो कहते हैं कि तुम किस हालत में थे? वह कहते हैं कि हम जमीन में कमजोर थे,[1] तो वे सवाल करते हैं कि क्या अल्लाह की जमीन कुशादा न थी कि तुम उस में हिजरत कर जाते? इन्हीं लोगों का मुक़ाम जहन्नम है और वह बुरा मुक़ाम है।

إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ﴿98﴾

९८. लेकिन जो मर्द, औरत और बच्चे मजबूर हैं जो कोई उपाय नहीं कर सकते और न रास्ता जानते हैं।[2]

فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْفُوَ عَنْهُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿99﴾

९९. तो बहुत मुमकिन है कि अल्लाह (तआला) उन्हें माफ कर दे, और अल्लाह माफ करने वाला बख़्शने वाला है।

وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرَاغَمًا كَثِيرًا وَسَعَةً ۚ وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿100﴾

१००. और जो कोई अल्लाह की राह में हिजरत करेगा, वह जमीन पर बहुत से रहने की जगह भी पायेगा और कुशादगी भी, और जो कोई अपने घर से अल्लाह (तआला) और उस के रसूल (ﷺ) की तरफ़ निकल पड़ा, फिर उसे मौत ने पकड़ लिया हो तो भी जरूर उसका अज्र अल्लाह (तआला) के ऊपर होगा, और अल्लाह (तआला) माफ करने वाला रहीम है।

The Ummah Technology Mission

---

[1] यहाँ "जमीन" से मुराद आयत के उतरने की फ़ज़ीलत की बुनियाद पर मक्का और उसका क़रीबी इलाक़ा है और अल्लाह की जमीन से मुराद मदीना है, लेकिन हुक्म के बुनियाद पर आम धरती है यानी पहला मुक़ाम काफ़िरों का इलाक़ा होगा, जहाँ इस्लाम की तालीम के हिसाब से काम करना कठिन हो जाये। और अल्लाह की जमीन से मुराद वह हर इलाक़ा होगा जहाँ इंसान अल्लाह के दीन की पैरवी के मक़सद से हिजरत करके जाते हैं।

[2] यह उन मर्दों, औरतों और बच्चों को इस हुक्म से अलग किया है, जो वसायेल से महरूम और जो राह से भी अंजान थे। बच्चे अगरचे दीनी क़ानून की पैरवी करने के लिए मजबूर नहीं हैं, लेकिन यहाँ उनका बयान करके हिजरत की फ़ज़ीलत को और वाजेह किया गया है कि बच्चे भी हिजरत करें या फिर यहाँ पर बालिग़ उम्र के क़रीब पहुँचने वाले बच्चे होगें।

وَاِذَا ضَرَبۡتُمۡ فِى الۡاَرۡضِ فَلَيۡسَ عَلَيۡكُمۡ جُنَاحٌ اَنۡ تَقۡصُرُوۡا مِنَ الصَّلٰوةِ ‌ۖ اِنۡ خِفۡتُمۡ اَنۡ يَّفۡتِنَكُمُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا‌ ؕ اِنَّ الۡكٰفِرِيۡنَ كَانُوۡا لَـكُمۡ عَدُوًّا مُّبِيۡنًا ﴿101﴾

१०१. और जब ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर नमाज़ क़स्र करने (चार रकअत की नमाज़ दो रकअत पढ़ने में) कोई बुराई नहीं, अगर तुम्हें यह डर हो कि काफ़िर (विश्वासहीन) तुम्हें तकलीफ़ देंगे,[1] बेशक कुफ़्फ़ार तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।

وَاِذَا كُنۡتَ فِيۡهِمۡ فَاَقَمۡتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلۡتَقُمۡ طَآئِفَةٌ مِّنۡهُمۡ مَّعَكَ وَلۡيَاۡخُذُوۡۤا اَسۡلِحَتَهُمۡ فَاِذَا سَجَدُوۡا فَلۡيَكُوۡنُوۡا مِنۡ وَّرَآئِكُمۡ وَلۡتَاۡتِ طَآئِفَةٌ اُخۡرٰى لَمۡ يُصَلُّوۡا فَلۡيُصَلُّوۡا مَعَكَ وَلۡيَاۡخُذُوۡا حِذۡرَهُمۡ وَاَسۡلِحَتَهُمۡ‌ ۚ وَدَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَوۡ تَغۡفُلُوۡنَ عَنۡ اَسۡلِحَتِكُمۡ وَاَمۡتِعَتِكُمۡ فَيَمِيۡلُوۡنَ عَلَيۡكُمۡ مَّيۡلَةً وَّاحِدَةً‌ ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيۡكُمۡ اِنۡ كَانَ بِكُمۡ اَذًى مِّنۡ مَّطَرٍ اَوۡ كُنۡتُمۡ مَّرۡضٰۤى اَنۡ تَضَعُوۡۤا اَسۡلِحَتَكُمۡ‌ ۚ وَخُذُوۡا حِذۡرَكُمۡ‌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلۡكٰفِرِيۡنَ عَذَابًا مُّهِيۡنًا ﴿102﴾

१०२. और जब आप उन में हों और उन के लिए नमाज़ को क़ायम करें तो चाहिए कि उनका एक गुट आप के साथ हथियार लिए खड़ा हो, फिर जब यह सज्दा कर चुकें तो यह हट कर तुम्हारे पीछे आ जायें और दूसरा गुट जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी है वह आ जाये, और तेरे साथ नमाज़ अदा करे और अपना बचाव और अपने हथियार लिए रहे, काफ़िर चाहते हैं कि तुम किसी तरह अपने हथियार और अपने सामानों से बेख़बर हो जाओ, तो वह तुम पर अचानक हमला कर दें[2] और हाँ, अपने हथियार उतारकर रखने में उस वक़्त तुम पर कोई बुराई नहीं जबकि तुम तकलीफ़ में हो, या बारिश की वजह या रोग होने की वजह हो और

---

[1] इस में सफ़र की हालत में नमाज़ क़स्र करना (चार रकअत वाली नमाज़ को दो रकअत ही पढ़ने) की इजाज़त दी जा रही है। «अगर तुम्हें डर हो» ग़ालिब हालात की बुनियाद पर है, क्योंकि उस समय पूरा अरब मैदाने जंग बना हुआ था, किसी तरफ़ का सफ़र ख़तरे से ख़ाली नहीं था, यानी यह रुकावट नहीं है कि अगर रास्ता में डर हो तो क़स्र का हुक्म है, क्योंकि क़ुरआन करीम के दूसरे मुक़ामों पर इसी तरह की शर्तों का बयान है जो ग़ालिब हालात से ऐसा मुमकिन हो सकता है। जैसे «तुम अपनी दासियों को बदकारी के लिए मजबूर न करो, अगर वह इससे बचना चाहें» चूँकि वह बचना चाहती थी इसलिए अल्लाह तआला ने बयान किया, नहीं तो इसका मतलब यह कदापि नहीं कि अगर वह तैयार हों तो तुम्हारे लिए जायेज़ है कि तुम उन से कुकर्म करवा लिया करो।

[2] इस आयत में सलातुल ख़ौफ़ (डर के वक़्त की नमाज़) की आज्ञा, बल्कि हुक्म दिया जा रहा है। सलातुल ख़ौफ़ का मतलब है डर की नमाज़, यह उस वक़्त जायेज़ है, जब मुसलमान और काफ़िरों की फ़ौजें आमने-सामने जंग के लिए तैयार खड़ी हों और एक पल की भी ग़फ़लत मुसलमानों के लिए बहुत ही नुक़सानदह साबित हो सकती है, ऐसे वक़्त में अगर नमाज़ का वक़्त आ जाये तो सलातुल ख़ौफ़ का हुक्म है।

The Ummah Technology Mission

अपने बचाव के सामान साथ में लिये रखो। बेशक अल्लाह तआला ने नकारने वालों के लिए रुसवाई का अज़ाब तैयार कर रखा है।

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَإِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿103﴾

१०३. फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो उठते, बैठते और लेटते अल्लाह (तआला) का ज़िक्र करते रहो[1] और शांति प्राप्त (हासिल) हो तो नमाज़ क़ायम करो, बेशक[2] नमाज़ मुसलमानों पर निश्चित और निर्धारित (मुक़र्रर) वक़्त पर फ़र्ज़ की गयी है।[3]

وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿104﴾

१०४. और उन लोगों का पीछा करने से सुस्ती न करो, अगर तुम्हें तकलीफ़ होती है, तो उन्हें भी तकलीफ़ होती है जैसे तुम्हें होती है, और तुम अल्लाह (तआला) से वह उम्मीदें रखते हो जो उन्हें नहीं, और अल्लाह (तआला) जानने वाला हिक्मत वाला है।

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ۭ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآىِٕنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿105﴾

१०५. बेशक, हम ने तुम्हारी तरफ़ हक़ के साथ किताब उतारा है, ताकि तुम लोगों के बीच उस के हिसाब से इंसाफ़ करो जिस से अल्लाह (तआला) ने तुम्हें बाख़बर कराया, और ख़्यानत करने वालों के हिमायती न बनो।

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿106﴾

१०६. और अल्लाह (तआला) से माफ़ी माँगो, बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

The Ummah Technology Mission

---

[1] मुराद यही डर की नमाज़ है, इस में चूँकि सहूलत दी गयी है, इसलिए इसको पूरा करने के लिए कहा जा रहा है कि खड़े, बैठे, और लेटे अल्लाह का बयान करते रहो।

[2] इस से मुराद यह है कि जब जंग के बादल छँट जायें तो फिर नमाज़ को उस के उसी तरीक़े के हिसाब से पढ़ना है, जो आम हालत में पढ़ी जाती है।

[3] इस में नमाज़ को मुक़र्ररा वक़्त से पढ़ने पर ज़ोर दिया जा रहा है, जिस से मालूम होता है कि दीनी वजुहात के बग़ैर दो नमाज़ों को जमा करना सही नहीं है, क्योंकि इस तरह कम से कम एक नमाज़ अपने मुक़र्ररा वक़्त पर नहीं पढ़ी जायेगी, जो इस आयत के ख़िलाफ़ है।

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنْفُسَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا (107)

१०७. और उनकी ओर से झगड़ा न करो जो ख़ुद अपना ही विश्वासघात करते हैं, बेशक धोखेबाज़ पापी अल्लाह (तआला) को अच्छा नहीं लगता।

يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَىٰ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا (108)

१०८. वह लोगों से तो छुप जाते हैं, लेकिन अल्लाह से नहीं छुप सकते, वह उन के साथ है जब कि वे रात में अप्रिय बातों की योजना बनाते हैं और अल्लाह उन के करतूत को घेरे हुये है।

هَا أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ جَادَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَنْ يُجَادِلُ اللَّهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَمْ مَنْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا (109)

१०९. हाँ, यह तुम लोग हो जो उन के हक़ में दुनिया में लड़े, लेकिन क़यामत के दिन उन की तरफ़ से अल्लाह से कौन बहस करेगा और कौन उनका वकील बनकर खड़ा होगा।[1]

وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَحِيمًا (110)

११०. और जो भी कोई बुराई करे या ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह से माफ़ी माँगे तो अल्लाह को बख़्शने वाला, रहम करने वाला पायेगा।

وَمَنْ يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا (111)

१११. और जो गुनाह करता है उसका बोझ उसी पर है,[2] और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है।

وَمَنْ يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُبِينًا (112)

११२. और जो कोई बुराई या गुनाह करता है फिर किसी बेगुनाह पर थोप देता है, उस ने खुला बुहतान और बहुत गुनाह किया।

[1] यानी जब इस गुनाह की वजह से उसकी पकड़ होगी, तो कौन अल्लाह की पकड़ से उसे बचा सकेगा?

[2] इस विषय को दूसरी आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है :

﴿وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ﴾

"कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा।" (सूर: बनी इस्राईल-१५)

यानी कोई किसी का उत्तरदायी (जवाबदेह) नहीं होगा, हर इंसान को वही कुछ मिलेगा जो कमा कर साथ ले गया होगा।

The Ummah Technology Mission

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا (113)

११३. और अगर आप पर अल्लाह का फ़ज़्ल और रहमत न होती तो उन के एक गुट ने आप को गुमराह करने की साजिश कर लिया था, लेकिन वह ख़ुद को गुमराह करते हैं और वह आप को कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकते और अल्लाह ने आप पर किताब और इल्म उतारा है और आप जिसको नहीं जानते थे उसका इल्म दिया है और आप पर अल्लाह का भारी फ़ज़्ल है।

لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا (114)

११४. उनकी ज़्यादातर कानाफूसी में कोई भलाई नहीं,[1] लेकिन जिस ने एहसान या भलाई या लोगों के बीच सुधार के लिये हुक्म दिया[2] और जो यह काम अल्लाह की मर्ज़ी की खोज के लिए करेगा[3] हम उसे हक़ीक़त में बहुत बड़ा बदला देंगे।

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا (115)

११५. और जो सच्ची राह के वाज़ेह होने के बाद रसूल (मुहम्मद ﷺ) की मुख़ालफ़त करेगा और मुसलमानों के रास्ते के सिवाय खोज करेगा, हम उसे उसी ओर जिस ओर वह फिरता हो फेर देंगे, फिर हम उसे जहन्नम में झोंक[4] देंगे और वह बहुत बुरी जगह है।

---

[1] نجوى नजवा (कानफूसी) से मुराद वह बातें हैं जो मुनाफ़िक़ आपस में मुसलमानों के ख़िलाफ़ या एक-दूसरे के ख़िलाफ़ करते थे।

[2] यानी दान-पुण्य (सदक़ात), भलाई (जो हर तरह के सवाब को शामिल है) और लोगों के बीच सुधार करने के बारे में मशविरा सवाब पर आधारित हैं, जैसाकि इन कामों की फ़ज़ीलत और अहमियत पर हदीस में भी ज़ोर दिया गया है।

[3] क्योंकि अगर इख़्लास (यानी अल्लाह की ख़ुशी का मक़सद) नहीं होगा, तो बड़े से बड़ा कर्म भी बेकार जायेगा, बल्कि फ़ितना बन जायेगा। अल्लाह हमें फ़ितना और दिखावे के काम से बचाये।

[4] हिदायत वाज़ेह हो जाने के बाद रसूलुल्लाह ﷺ के ख़िलाफ़ और मुसलमानों का रास्ता छोड़ कर किसी दूसरे रास्ते की पैरवी इस्लाम में से निकलना है, जिस पर यहाँ जहन्नम की धमकी दी गयी है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا (116)

**११६.** अल्लाह अपने साथ शिर्क किये जाने को कभी भी माफ़ नहीं करेगा और इस के सिवाय (गुनाहों) को जिस के लिये चाहे माफ़ कर देगा और जिस ने अल्लाह के साथ शिर्क किया वह बहुत दूर बहक गया।

إِنْ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا إِنَاثًا وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا (117)

**११७.** यह तो अल्लाह (तआला) को छोड़कर केवल देवियों को पुकारते हैं[1] और हक़ीक़त में यह दुष्ट (मरदूद) शैतान को पुकारते हैं।[2]

لَعَنَهُ اللَّهُ ۘ وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَفْرُوضًا (118)

**११८.** जिसे अल्लाह (तआला) ने लानत की है, और उस ने कहा है कि तेरे बन्दों में से मैं मुक़र्रर हिस्सा ले कर रहूँगा।[3]

وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُبِينًا (119)

**११९.** और उन्हें राह से भटकाता रहूँगा और झूठी उम्मीदें दिलाता रहूँगा[4] और उन्हें तालीम दूँगा कि जानवरों के कान चीरें[5] और उन से कहूँगा कि अल्लाह की बनाई हुई शक्ल बिगाड़ दें। सुनो, जो अल्लाह को छोड़ कर शैतान को अपना दोस्त बनायेगा वह खुले घाटे में होगा।

The Ummah Technology Mission

---

[1] إناث (इनास) (औरतों) से मुराद या तो मूर्तियाँ हैं, जिनके नाम स्त्रीलिंग में थे। जैसे لات (लात), عزى (उज़्ज़ा), مناة (मनात) और نائلة (नायेल:) आदि। या मुराद फ़रिश्ते हैं, क्योंकि अरब के मूर्तिपूजक फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ समझते थे और उनकी इबादत करते थे।

[2] मूर्ति, फ़रिश्तों और दूसरे लोगों की इबादत हक़ीक़त में शैतान की इबादत है, क्योंकि शैतान ही इंसान को अल्लाह के दरवाज़े से बहका कर दूसरे के दरबार में और चौखट पर झुकाता है, जैसा कि अगली आयत में है।

[3] "मुक़र्रर हिस्सा" से मुराद नज़र-नियाज़ भी हो सकता है, जो मूर्तिपूजक, क़ब्रों में दफ़न (गड़े) इंसान के नाम पर निकालते हैं और नरकवासियों का वह हिस्सा भी हो सकता है, जिन्हें शैतान भटका कर अपने साथ जहन्नम में ले जायेगा।

[4] यह वह झूठी उम्मीदें हैं, जो शैतान के लालच और हस्तक्षेप (दख़लअंदाज़ी) से पैदा होती हैं और इंसानों के भटकावे की वजह बनती हैं।

[5] यह بحيرة (बहीर:) और سائبة (सायब:) जानवरों के निशान और शक्ल हैं। मुशरिक उनको मूर्तियों के नाम से दान कर देते थे, तो पहचान के लिए कान आदि चीर दिया करते थे।

| | |
|---|---|
| १२०. वह उन से (जबानी) वादे करता रहेगा और हरे बाग़ दिखाता रहेगा (लेकिन याद रखो) शैतान के जो वादे उन से हैं वह पूरी तरह से धोखा हैं। | يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَٰنُ إِلَّا غُرُورًا ﴿120﴾ |
| १२१. यह वह लोग हैं जिनका मुक़ाम जहन्नम है, जहाँ से उन्हें छुटकारा नहीं मिलेगा। | أُولَٰٓئِكَ مَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا ﴿121﴾ |
| १२२. और जो ईमान लायें और भले काम करें, हम उन्हें उन जन्नतों में ले जायेंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जहाँ वह हमेशा रहेंगे। यह है अल्लाह का वादा जो बेशक सच है और अल्लाह से अधिक सच्चा अपनी बात में कौन हो सकता है? | وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ﴿122﴾ |
| १२३. तुम्हारी आरज़ूओं और अहले किताब की आरज़ूओं से कुछ नहीं होना है, जो बुरा करेगा उस की सजा पायेगा और अल्लाह के सिवाय अपना कोई वली और मददगार नहीं पायेगा। | لَّيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَا أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتَٰبِ ۗ مَن يَعْمَلْ سُوٓءًا يُجْزَ بِهِۦ وَلَا يَجِدْ لَهُۥ مِن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿123﴾ |
| १२४. और जो ईमानवाला हो मर्द हो या औरत और वह नेक अमल करे, बेशक इस तरह के लोग जन्नत में जायेंगे और खजूर की गुठली की फाँक के बराबर भी उस का हक़ नहीं मारा जायेगा। | وَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّٰلِحَٰتِ مِن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰٓئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا ﴿124﴾ |
| १२५. और उस से अच्छे दीन वाला कौन हो सकता है जो अल्लाह के लिए पूर्ण आत्म-समर्पण (मुकम्मल ख़ुद सपुर्दगी) कर दे और वह नेक भी हो, और इब्राहीम के दीन की पैरवी किया हो जो यकसू थे और इब्राहीम को अल्लाह ने अपना दोस्त बना लिया है।[1] | وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِّمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُۥ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ إِبْرَٰهِيمَ حَنِيفًا ۗ وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَٰهِيمَ خَلِيلًا ﴿125﴾ |

[1] यहाँ कामयाबी का एक मेयार और उसके एक नमूना का बयान किया जा रहा है, पैमाना यह है कि ख़ुद को अल्लाह के हवाले कर दे, भलाई करने वाला बन जाये और इब्राहीम के दीन की पैरवी करे और हज़रत इब्राहीम वह हैं, जिनको अल्लाह तआला ने अपना ख़लील बनाया।

The Ummah Technology Mission

१२६. और जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में है अल्लाह का है और अल्लाह हर चीज़ को घेरने वाला है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطًا ﴿126﴾

१२७. वे औरतों के बारे में आप से सवाल करते हैं, आप कह दें कि ख़ुद अल्लाह तुम्हें उन के बारे में हुक्म देता है और जो कुछ किताब (क़ुरआन) में तुम्हारे सामने पढ़ा जाता है, उन यतीम औरतों (लड़कियों) के बारे में जिन को तुम उन का वाजिब हक़ नहीं देते और उन से शादी करना चाहते हो और कमज़ोर बच्चों के बारे में और यह कि तुम यतीमों के बारे में इंसाफ़ करो, और तुम जो भी नेक काम करोगे अल्लाह उसे अच्छी तरह जानने वाला है।

وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ ۖ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِي يَتٰمَى النِّسَاءِ الّٰتِي لَا تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْوِلْدَانِ وَأَنْ تَقُومُوا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا ﴿127﴾

१२८. और अगर किसी बीवी को अपने शौहर की बेरुख़ी और बेपरवाही का डर हो तो दोनों पर आपस में सुलह कर लेने में कोई बुराई नहीं[1] और सुलह बेहतर है, और लालच हर मन में शामिल कर दी गई है, और अगर तुम एहसान करो और तक़्वा अख़्तियार करो तो अल्लाह तुम्हारे करतूतों से बाख़बर है।

وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۚ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۗ وَأُحْضِرَتِ الْأَنْفُسُ الشُّحَّ ۚ وَإِنْ تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿128﴾

१२९. और तुम बीवियों के बीच कभी भी इंसाफ़ न कर सकोगे, अगरचे इसकी आरज़ू रखो, इसलिए तुम (एक की ओर) पूरी तरह न झुक जाओ कि दूसरी को अधर में लटकती हुई छोड़ दो, और अगर तुम सुधार कर लो और (नाइंसाफ़ी से) बचो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।

وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ۚ وَإِنْ تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿129﴾

[1] शौहर अगर किसी वजह से अपनी बीवी को पसन्द न करे और उस से दूरी और बेरुख़ी और इंकार रोज़ का अमल बना ले या एक से अधिक बीवियाँ होने की हालत में किसी कम ख़ूबसूरत बीवी से दूर रहे तो बीवी अपना कुछ हक़ छोड़ कर शौहर से सुलह कर ले, तो इस सुलह से शौहर-बीवी पर कोई गुनाह न होगा, क्योंकि सुलह हर हालत में बेहतर है। मोमिनों की माँ हज़रत सौदा (رضي الله عنها) ने भी अपने बुढ़ापे में अपनी बारी हज़रत आयेशा को दे दिया था, जिसे नबी ﷺ ने क़ुबूल किया था। (सहीह बुख़ारी, मुस्लिम, किताबुन निकाह)



The Ummah Technology Mission

१३०. और अगर दोनों जुदा हो जायें तो अल्लाह अपनी रह्मत से दोनों को बेनियाज कर देगा, और अल्लाह कुशादगी वाला हिक्मत वाला है।

وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿130﴾

१३१. और आसमानों और जमीन का सब कुछ अल्लाह ही का है, और हम ने तुम से पहले के लोग जो किताब दिये गये थे, उन को और तुम को यही हुक्म दिया है कि अल्लाह से डरो और अगर तुम न मानो तो बेशक जो आसमानों में और जमीन में है सब अल्लाह ही का है और अल्लाह बेनियाज, तारीफ़ किया गया है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ۚ وَإِنْ تَكْفُرُوْا فَإِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿131﴾

१३२. और जो भी आसमानों में और जमीन में है सभी अल्लाह का है और अल्लाह काम बनाने वाला बस है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿132﴾

१३३. हे लोगो ! अगर वह चाहे तो तुम सब को ले जाये और दूसरों को ले आये, और अल्लाह इस पर पूरी क़ुदरत रखने वाला है।

إِنْ يَّشَأْ يُذْهِبْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِاٰخَرِيْنَ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿133﴾

१३४. जो इंसान दुनियावी बदला चाहता हो, तो (याद रखो कि) अल्लाह के पास दुनिया व आख़िरत (दोनों का) बदला मौजूद है और अल्लाह सुनता देखता है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿134﴾

१३५. हे ईमानवालो! इंसाफ़ पर मजबूत रहने वाले और अल्लाह के लिये सच गवाही देने वाले बन जाओ, अगरचे वह ख़ुद तुम्हारे अपने और माँ-बाप और रिश्तेदारों के[1] ख़िलाफ़ हो, अगर वह इंसान धनी हो तो या ग़रीब हो तो उन दोनों से अल्लाह का रिश्ता ज़्यादा है[2] इसलिए

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى أَنْفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِيْنَ ۚ إِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا أَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ أَوْلٰى بِهِمَا ۖ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى أَنْ تَعْدِلُوْا

The Ummah Technology Mission

---

[1] इस में अल्लाह तआला ने ईमानवालों को इंसाफ़ क़ायम करने और सच्ची गवाही देने पर जोर दिया है, चाहे उसकी वजह से उनको ख़ुद या माँ-बाप और रिश्तेदारों को नुक़सान ही क्यों न उठाना पड़े, इसलिए कि सच्चाई सब से बड़ी है और प्रभावशाली (ग़ालिब) है।

[2] यानी किसी धनवान के धन की वजह से छूट दी जाये, और न किसी ग़रीब की ग़रीबी का डर तुम्हें सच बात कहने से रोके बल्कि अल्लाह इन दोनों से तुम्हारे ज़्यादा क़रीब और अच्छा है।

وَإِن تَلْوُۥٓا۟ أَوْ تُعْرِضُوا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿135﴾

इंसाफ़ करने में मनमानी न करो और अगर ग़लत बयान दोगे या न मानोगे तो अल्लाह तुम्हारे अमल से बाख़बर है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ ءَامِنُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَٱلْكِتَٰبِ ٱلَّذِى نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ وَٱلْكِتَٰبِ ٱلَّذِىٓ أَنزَلَ مِن قَبْلُ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَٰلًۢا بَعِيدًا ﴿136﴾

१३६. हे ईमानवालो! अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) और उस किताब (पाक क़ुरआन) पर जिसे उस ने अपने रसूल (ﷺ) पर उतारी है और उन किताबों के ऊपर ईमान लाओ जो इस से पहले उतारी गयी, और जो अल्लाह और उस के फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उस के रसूलों और क़यामत के दिन को नहीं माने वह बहुत दूर बहक गया।

إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ثُمَّ كَفَرُوا۟ ثُمَّ ءَامَنُوا۟ ثُمَّ كَفَرُوا۟ ثُمَّ ٱزْدَادُوا۟ كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ ٱللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًۢا ﴿137﴾

१३७. बेशक जो ईमान लाये फिर नकार दिये, फिर ईमान लाये फिर इंकार किये और इंकार में बढ़ गये, अल्लाह हक़ीक़त में उन्हें माफ़ नहीं करेगा और न सीधा रस्ता दिखायेगा।

بَشِّرِ ٱلْمُنَٰفِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿138﴾

१३८. मुनाफ़िक़ों को बाख़बर कर दो कि उन के लिये दु:खद अज़ाब ज़रूरी है।

ٱلَّذِينَ يَتَّخِذُونَ ٱلْكَٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۚ أَيَبْتَغُونَ عِندَهُمُ ٱلْعِزَّةَ فَإِنَّ ٱلْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ﴿139﴾

१३९. जो मुसलमानों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वह उन के पास इज़्ज़त की खोज करते हैं? (तो याद रहे कि) सभी इज़्ज़त अल्लाह के हक़ में है।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِى ٱلْكِتَٰبِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا۟ مَعَهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا۟ فِى حَدِيثٍ غَيْرِهِۦٓ ۚ إِنَّكُمْ إِذًا مِّثْلُهُمْ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ جَامِعُ ٱلْمُنَٰفِقِينَ وَٱلْكَٰفِرِينَ فِى جَهَنَّمَ جَمِيعًا ﴿140﴾

१४०.और अल्लाह (तआला) ने तुम पर अपनी किताब (पाक क़ुरआन) में यह हुक्म उतारा है कि जब तुम अल्लाह की आयतों के साथ इंकार और मज़ाक़ होते सुनो तो उनके साथ उस मजलिस में न बैठो, जब तक कि वे दूसरी बात में न लग जायें, क्योंकि इस वक़्त तुम उन्हीं के समान होगे,[1] बेशक अल्लाह मुनाफ़िक़ों और

[1] यानी मना करने के बावजूद अगर तुम ऐसी मजलिसों में जहाँ अल्लाह की आयतों का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा हो बैठोगे और उसे रोकोगे नहीं, तो फिर तुम भी उन के बराबर गुनाह के हिस्सेदार बनोगे।

The Ummah Technology Mission

काफिरों (विश्वासहीनों) को जहन्नम में इकट्ठा करने वाला है।

१४१. जो तुम्हारे बारे में इंतेजार (प्रतीक्षा) करते हैं, फिर अगर तुम्हारी जीत अल्लाह की तरफ से हो तो ये कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे और अगर विश्वासहीनों (काफिरों) को जरा-सी कामयावी मिले तो कहते हैं कि क्या हम ने तुम्हें घेर नहीं लिया और मुसलमानों से नहीं वचाया था? तो क़यामत (प्रलय) के दिन अल्लाह ही तुम्हारे वीच फ़ैसला करेगा और अल्लाह कभी भी काफिरों को मुसलमानों पर कोई रास्ता (ग़ल्वा) नहीं देगा।

الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِن كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللَّهِ قَالُوا أَلَمْ نَكُن مَّعَكُمْ وَإِن كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ قَالُوا أَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُم مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَن يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا (141)

१४२. वेशक मुनाफिकीन अल्लाह (तआला) से छल कर रहे हैं, और वह उन्हें उस छल का वदला देने वाला है, और जव नमाज को खड़े होते हैं, तो बड़ी सुस्ती की हालत में खड़े होते हैं[1] सिर्फ लोगों को दिखाते हैं[2] और अल्लाह की याद वस वहुत कम करते हैं।

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كُسَالَىٰ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا (142)

The Ummah Technology Mission

---

[1] नमाज इस्लाम का ख़ास रुक्न है और सव से वड़ा अमल है, और इस में भी वह काहिली और सुस्ती का दिखावा करते थे, क्योंकि उनका दिल ईमान और अल्लाह के डर और पाकी से महरूम था। यही वजह थी कि ईशा (रात) और फ़ज्र (सुवह) की नमाजें ख़ास तौर से उन पर भारी थीं, जैसाकि नवी ﷺ का फ़रमान है।

«أَثْقَلُ الصَّلَاةِ عَلَى الْمُنَافِقِينَ صَلَاةُ الْعِشَاءِ وَصَلَاةُ الْفَجْرِ...»

"मुनाफिकों के ऊपर ईशा और फज्र की नमाज सव से भारी है।" (सहीह वुख़ारी, मवाक़ीतुसस्लात, सहीह मुस्लिम, कितावुल मसाजिद)

[2] यह नमाज भी वह मक्कारी और दिखावे के लिए पढ़ते थे ताकि मुसलमानों को धोखा दे सकें।

مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿143﴾

१४३. वह बीच में ही असमंजस्य (शक व शुब्हा) में हैं, न पूरी तरह से उनकी ओर न जायज तरीके से इन की तरफ़, और जिसे अल्लाह (तआला) भटका दे, तो तू उस के लिए कोई रास्ता नहीं पायेगा।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿144﴾

१४४. हे ईमानवालो! ईमानवालों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त न बनाओ, क्या तुम यह चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह (तआला) की खुली हुज्जत क़ायम कर लो।

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ﴿145﴾

१४५. मुनाफ़िक़ीन तो बेशक (नि:संदेह) जहन्नम के सब से निचले दर्जे में जायेंगे।[1] नामुमकिन है कि तू उनका कोई मदद करने वाला पा ले।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿146﴾

१४६. हाँ, अगर माफ़ी माँग लें और सुधार कर लें और अल्लाह (तआला) पर पूरा यक़ीन करें और सच्चे तौर से अल्लाह ही के लिए दीनी काम करें, तो यह लोग ईमानवालों के साथ हैं।[2] अल्लाह (तआला) ईमानवालों को बहुत बड़ा बदला देगा।

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿147﴾

१४७. अल्लाह (तआला) तुम्हें सज़ा देकर क्या करेगा, अगर तुम शुक्रगुज़ार रहो और ईमान के साथ रहो? और अल्लाह (तआला) बहुत इज़्ज़त करने वाला पूरा जानने वाला है।

---

[1] जहन्नम का सब से निचला दर्जा هاوية (हाविय:) कहलाता है, أعاذنا الله منها मुनाफ़िक़ों के बयानों अमलों और बुराईयों से हम सभी मुसलमानों की अल्लाह तआला हिफ़ाज़त करे।

[2] यानी मुनाफ़िक़ों में से जो इन चार बातों का साफ़ दिल से एहतेराम करेगा, वह जहन्नम मे जाने के बजाय जन्नत में ईमानवालों के साथ होगा

The Ummah Technology Mission